स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन

महावीर प्रसाद द्विवेदी

प्रदत्त कार्य-1 : गरिमामयी नारी

विषय : पौराणिक कथाओं का संकलन (वीरांगना / गरिमाययी नारी)

उद्देश्य :

- विचार संकलन मनोप्रवृत्ति को बढ़ावा देना।
- तथ्यों की पुष्टि करने की जानकारी देना।
- पौराणिक कथाओं के प्रति रुचि जागृत करना।
- नैट पर सूचना एकत्रित करने के लिए प्रोत्साहित करना।
- लेखन कौशल एवं वाचन कौशल का विकास करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सर्वप्रथम शिक्षक छात्रों को चार समूहों में विभक्त करेगा।
2. उन्हें किसी एक वीरांगना एवं गरिमामयी नारी की कहानी सुनाई जायेगी।
3. मूल्यांकन के आधार श्याम पट्ट पर लिखे जाएँगे।
4. प्रत्येक समूह को अलग-अलग प्रसंग दिए जाएँगे जैसे लक्ष्मीबाई इत्यादि।
5. इस तरह चार कथाओं का संकलन करेंगे और सभी समूह कथा पढ़कर सुनाएँगे।
6. एक समूह का मूल्यांकन दूसरे से, दूसरे का तीसरे से, तीसरे का चौथे से तथा चौथे का पहले से कराया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- तथ्यों की जानकारी
- प्रस्तुतीकरण
- भाषा

टिप्पणी :

- अध्यापक स्वतन्त्र रूप से भिन्न मूल्यांकन आधार बिन्दुओं द्वारा भी मूल्यांकन कर सकता है।

प्रतिपुष्टि :

- सर्वोत्तम शैली में लिखित कथा को कक्षा में भित्ति पर प्रदर्शित किया जाए।
- जो छात्र इस गतिविधि में भाग नहीं ले पा रहे हैं उन्हें प्रोत्साहन देकर प्रेरित किया जाए।
- क्रियाशील विद्यार्थियों की सराहना की जाएगी।

प्रदत्त कार्य-2 : वाद विवाद

विषय : क्या आधुनिक शिक्षा प्रणाली चरित्र निर्माण में सक्षम है?

उद्देश्य :

- वाचन कौशल का विकास करना।
- आज की शिक्षा प्रणाली से परिचित कराना।
- इसके सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्षों का संक्षिप्त परिचय देना।
- तार्किक क्षमता का विकास करना।
- वाद विवाद के नियमों को समझाना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सर्वप्रथम शिक्षक आधुनिक एवं प्राचीन शिक्षा प्रणाली के अन्तर को स्पष्ट करेगा।
2. स्त्रियों को शिक्षा प्राप्त करने का समान अधिकार है ऐसा प्रचार गांव गांव में होना चाहिए यह छात्रों को बताया जायेगा।
3. विद्यार्थियों को दो समूहों में विभक्त किया जायेगा व दो छात्रों को निर्णायक बनाया जायेगा।
4. समूह चर्चा एवं तैयारी के लिए 10 मिनट का समय दिया जाएगा।
5. एक समूह पक्ष में और दूसरा विपक्ष में बोलेगा।
6. एक समूह से कम से कम 3 छात्र अवश्य बोलेंगे।
7. इस बीच अध्यापक कक्षा का निरीक्षण करेंगे।
8. मूल्यांकन के आधार शिक्षक प्रारम्भ में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषय वस्तु

- प्रस्तुतीकरण
- समग्र प्रभाव

टिप्पणी :

- इसके अतिरिक्त शिक्षक अपनी इच्छानुसार भी मूल्यांकन कर सकता है।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छे वक्ताओं को शाबासी देकर उनका उत्साह वर्धन किया जायेगा।
- जो छात्र उचित ढंग से नहीं बोल पाए उन्हें उत्साहित किया जायेगा।
- अच्छे वक्ताओं को विद्यालय के मंच पर बोलने को प्रेरित किया जाएगा।

प्रदत्त कार्य-3 : लेखन कार्य

विषय : स्वतन्त्रता पूर्व की प्रसिद्ध महिलाएँ एवं स्वतन्त्रता प्राप्ति में उनका योगदान। (सरोजिनी नायडू, एनी बेसन्ट तथा कस्तूरबा)

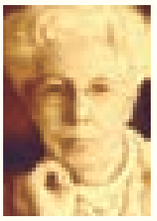

उद्देश्य :

- स्वतन्त्रता पूर्व देशवासियों के दृष्टिकोण को समझाना।
- सामान्य ज्ञान की वृद्धि करना।
- देश को स्वाधीन कराने में नारियों के योगदान की चर्चा करना।
- खोजपरक प्रवृत्ति का विकास करना।
- लेखन कौशल का विकास करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. उपरोक्त उद्देश्यों के माध्यम से शिक्षक उन प्रसिद्ध महिलाओं की चर्चा करेगा जिन्होंने देश के लिए अपना तन मन दिया।
2. छात्रों को व्यक्तिगत रूप से लिखित कार्य करने के लिए कहा जायेगा।
3. वे कम से कम दस महिलाओं का उल्लेख करेंगे जिन्होंने स्वतन्त्रता प्राप्ति में योगदान दिया।
4. तत्पश्चात् विद्यार्थियों को अपनी विषय वस्तु पढ़ने के लिए कहा जायेगा।
5. इस दौरान अध्यापक कक्षा में घूम घूम कर निरीक्षण करेंगे।
6. मूल्यांकन बिन्दु श्याम पट्ट पर लिखे जायें।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- सूची संकलन
- विषय की जानकारी
- प्रस्तुतीकरण

टिप्पणी :

- शिक्षक आवश्यकतानुसार स्वयं बनाए गए आधार बिन्दुओं द्वारा मूल्यांकन कर सकता है।

प्रतिपुष्टि :

- सही सूची बनाने वाले छात्रों को उत्साहित किया जायेगा।
- जो छात्र असमर्थ रहें उन्हें अच्छा कार्य करने की प्रेरणा दी जायेगी।
- उन महिलाओं की सूची कक्षा प्रदर्शन पट्ट पर लगाई जाए।
- अध्यापक की सुविधा के लिए कुछ प्रसिद्ध महिलाओं की सूची दी जा रही है –
  - सरोजिनी नायडू
  - सुभद्रा कुमारी चौहान
  - लक्ष्मी बाई
  - अरुणा आसिफ अली
  - दुर्गा भाभी

प्रदत्त कार्य-4 : पोस्टर बनाना

विषय : महिला सशक्तिकरण।

उद्देश्य :

- सामान्य ज्ञान की वृद्धि।
- देश-विदेश की उन्नति में महिलाओं के योगदान की जानकारी देना।
- खोजपरक प्रवृति का विकास करना।
- लेखन कौशल का विकास करना।
- कुछ विश्व प्रसिद्ध महिलाओं की विशेषताओं का वर्णन करना।

निर्धारित समय : दो कालांश

प्रक्रिया :

1. शिक्षक प्रसिद्ध महिलाओं की चर्चा करेंगे जिन्होंने देश की प्रगति में अपना योगदान दिया।
2. छात्रों को चार समूहों में विभक्त किया जाएगा।
3. प्रत्येक समूह कम से कम पाँच महिलाओं का उल्लेख करते हुए पोस्टर बनाएगा।
4. कक्षा में इन पोस्टरों का प्रदर्शन किया जाएगा।
5. मूल्यांकन के आधार बिन्दु शिक्षक प्रारंभ में ही श्यामपट्ट पर लिखेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषय संबद्धता
- प्रस्तुतीकरण
- समग्र प्रभाव

टिप्पणी :

- शिक्षक अपने स्वतन्त्र दृष्टिकोण द्वारा भी मूल्यांकन कर सकता है।
- किसी एक समाज सुधारक पर परियोजना कार्य।

प्रदत्त कार्य-5 : परिचर्चा एवं लेखन।

विषय : राजा राम मोहन राय द्वारा किए गए समाज सुधार के कार्य।

उद्देश्य :

- प्राचीन रूढ़ियों का खंडन करने की सीख देना।
- वाचन कौशल का विकास करना।
- तर्क शक्ति को विकसित करना।
- अच्छा वक्ता तथा श्रोता बनने के लिए प्रेरित करना।
- अन्य समाज सुधारकों के विषय में जानकारी देना।

निर्धारित समय : एक कालाशं

प्रक्रिया :

1. सर्वप्रथम कक्षा को चार समूहों में बांट दिया जएगा।

2. चारों समूहों को क्रमानुसार चार तत्कालीन ज्वलंत समस्याएं दी जाएंगी जिनका प्रतिकार राजा राम मोहन राय ने किया था।

3. अध्यापक निम्नलिखित चारों समस्याएं श्याम पट पर लिख देगा।

   - सती प्रथा
   - बाल विवाह
   - विधवा विवाह
   - नारी शिक्षा

4. छात्र उपरोक्त समस्याएँ अपनी उत्तर पुस्तिका पर लिखेंगे और परिचर्चा करने के पश्चात् अपने विचार केवल पचास शब्दों में व्यक्त करेंगे।

5. इस गतिविधि के दौरान अध्यापक प्रत्येक समूह का निरीक्षण करेंगे।

6. मूल्यांकन बिन्दु श्याम पट् पर लिखे जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषय की जानकारी
- तार्किक कुशलता
- सम्पूर्ण प्रभाव

टिप्पणी :

- इसके अलावा शिक्षक यदि चाहे तो स्वतन्त्र रूप से मूल्यांकन कर सकता है।

प्रतिपुष्टि :

- मौलिकता को ध्यान में रखते हुए जिन छात्रों ने अपने विचारों का प्रस्तुतीकरण किया है उनकी सराहना की जाएगी।
- जो छात्र विषय को नहीं समझ पाए उन छात्रों को पुनः समझाया जाएगा।
- अध्यापक उपर्युक्त विषयों पर संक्षिप्त टिप्पणी अवश्य करें।